समूह (Group)

अलग-अलग समाज मनोवैज्ञानिकों ने समूह को भिन्न-भिन्न ढंग से परिभाषित किये हैं।

APPOINTMENTS

Sherif and Sherif (1957) के अनुसार — "समूह एक सामाजिक इकाई है जिसमें कई व्यक्ति होते हैं, जो एक-दूसरे से एक निश्चित पद तथा भूमिका के आधार पर संबंधित होते हैं और जिसके ऐसे मूल्य या मानदण्ड होते हैं, जो वैयक्तिक सदस्य के व्यवहारों का नियंत्रण करते हैं या कम-से-कम समूह के लिये होने वाले परिणामों से संबंधित व्यवहारों को नियंत्रित करते हैं।"

Lindgren (1969) के अनुसार — "दो या दो से अधिक व्यक्तियों का एक-दूसरे के साथ क्रियात्मक संबंध में व्यस्त होने पर एक समूह का निर्माण होता है।"

Kretch, Crutchfield & Ballachey (1962) के अनुसार — "एक मनोवैज्ञानिक समूह दो या दो से अधिक वैसे व्यक्तियों को कहा जाता है, जो निम्नांकित शर्तें पूरा करते हैं — (i) सदस्यों के बीच का संबंध परस्पर आश्रित होता है, अर्थात् प्रत्येक सदस्य का व्यवहार दूसरे सदस्यों के व्यवहार को प्रभावित करता है।

(ii) सदस्यों के बीच एक विशेष विचारधारा अर्थात् विश्वास, मूल्य तथा मानदण्डों की साझेदारी होती है, जिससे सदस्यों का पारस्परिक आचरण निर्धारित होता है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि — "समूह दो या दो से अधिक व्यक्तियों की एक ऐसी सामाजिक इकाई है, जिसके सदस्य एक सामान्य लक्ष्य की प्राप्ति के लिए एक खास तरह के मानदण्ड के अनुसार परस्पर निर्भर रहते हुए अन्तःक्रिया करते हैं।"

समूह की संरचना (Structure of Group)

समूह संरचना से तात्पर्य समूह के उन गुणों से होता है, जिसके आधार पर हमें यह पता चलता है कि समूह का आकार कैसा है, समूह में सदस्यों की वैयक्तिक भूमिका क्या है, सदस्यों के बीच आपसी संबंध किस तरह का है,

NOTES

Scanned with CamScanner

तथा समाज के अन्य समूहों के साथ उसका संबंध कैसा है? आदि-आदि। अर्थात् समूह संरचना एक बहुआयामीय संप्रत्यय है। इन सूचनाओं से किसी समूह की जटिलता तथा उसके कार्यों का पता चलता है। समूह संरचना के आवश्यक तत्व निम्नांकित हैं—

 # समूह का आकार— समूह के आकार से तात्पर्य समूह में सदस्यों की संख्या से है। सबसे छोटा समूह दो सदस्यों से मिलकर बना हो सकता है। जैसे- पति-पत्नि का समूह, मालिक और नौकर का समूह आदि। जैसे-जैसे समूह में सदस्यों की संख्या बढ़ती जाती है, समूह का आकार बड़ा हो जाता है। जैसे— विश्वविद्यालय, राजनीतिक पार्टियों का समूह, व्यापारियों का समूह आदि। समाज मनोवैज्ञानिकों के अनुसार जैसे-जैसे समूह का आकार बढ़ता जाता है, उसमें जटिलता भी बढ़ती जाती है, क्योंकि उसके सदस्यों के बीच अन्तःक्रियात्मक संबंधों की संभावना भी बढ़ती जाती है।

समूह का आकार कुछ बाह्य, एवं आंतरिक या मनोवैज्ञानिक कारकों द्वारा निर्धारित होता है। जैसे— परिवार का आकार बाह्य कारक जैसे— बच्चे के जन्म या किसी सदस्य की मृत्यु के कारण बढ़ या घट जाता है। इसीप्रकार कुछ आंतरिक एवं मनोवैज्ञानिक कारकों द्वारा भी समूह का आकार प्रभावित होता है। जैसे— समूह के सदस्यों के बीच अत्यधिक तनाव या गुटबंदी के कारण कुछ सदस्य समूह से अलग हो जाते हैं, जिससे समूह का आकार छोटा हो जाता है। राजनैतिक पार्टियों का आकार ऐसे कारकों से प्रायः घटता-बढ़ता रहता है।

 # समूह सदस्यों की वैयक्तिक भूमिकाएँ— प्रत्येक समूह में सदस्यों की एक निश्चित भूमिका होती है। जब व्यक्ति किसी समूह का सदस्य बनता है तो वह किस तरह से दूसरे सदस्यों के साथ व्यवहार करेगा, यह बहुत कुछ उस समूह की संरचना के स्वरूप एवं व्यक्ति को दिये जाने वाले दायित्व पर निर्भर करता है। उदाहरणार्थ जब समूह की संरचना औपचारिक होती है, तो सदस्यों की अन्तःक्रियाएँ एक निश्चित नियम द्वारा निर्देशित होती हैं। जैसे- सरकारी कार्यालय में सदस्यों की भूमिकाएँ एवं

NOTES

अंतःक्रियाएँ। परंतु जब समूह की संरचना अनौपचारिक होती है तो उसके सदस्यों में पूर्व निश्चित एवं पूर्व परिभाषित अन्तर्वैयक्तिक संबंधों की कमी पायी जाती है

जैसे— परिवार, दोस्तों का समूह आदि। अनौपचारिक समूहों में सदस्यों की भूमिकाएँ प्रायः उनके व्यक्तिगत गुणों एवं योग्यताओं द्वारा निर्धारित होता है।

कुछ समाज मनोवैज्ञानिकों के अनुसार सामूहिक जीवन में व्यक्ति किस प्रकार कार्य करेगा, यह बहुत कुछ व्यक्ति के प्राथमिक समूह जैसे- परिवार में प्राप्त किये गये प्रारंभिक अनुभवों पर निर्भर करता है यह अनुभव जितना ही अधिक स्पष्ट एवं विस्तृत होगा, व्यक्ति द्वारा की गई भूमिका उतनी ही सराहनीय होगी।

■ **समूह संबंध** — समूह संबंध से तात्पर्य सदस्यों के बीच आपसी संबंध से होता है। समाज मनोवैज्ञानिकों के अनुसार समूह प्रायः समरूप नहीं होते हैं। वे अक्सर व्यावहारिक रूप से कुछ छोटे-छोटे उपसमूहों में बँटे होते हैं और ये प्रायः समरूप होते हैं। प्रत्येक समूह में वर्ग स्तर, एवं विचारों में भिन्नता के कारण कई उपसमूहों का निर्माण हो जाता है।

समाज मनोवैज्ञानिकों के अध्ययनों से यह पता चलता है कि एक उपसमूह के सदस्यों का व्यवहार दूसरे उपसमूह के प्रति प्रायः नकारात्मक होता है परंतु अपने समूह के अन्य सदस्यों के प्रति सकारात्मक होता है। यानी कि एक उपसमूह का दूसरे उपसमूह के बीच अंतःक्रियाएँ कम होती हैं, परंतु अपने उपसमूह में अधिक अंतःक्रिया होती है।

उपसमूहों के सदस्यों के बीच का संबंध लंबवत तथा समतल दोनों प्रकार का होता है। जब दो उपसमूहों के सदस्य समान स्तर एवं सत्ता के होते हैं, तो उनके बीच समतल संबंध होता है। लंबवत संबंध में श्रेणीबद्ध संबंध होते हैं, जहाँ एक सदस्य दूसरे सदस्य से स्तर एवं सत्ता में ऊपर या नीचे होते हैं।

■ **संचार संरचना** — संचार का स्वरूप या संचार संरचना से समूह की संरचना के जटिलता का भी पता चलता है। संचार से तात्पर्य

Scanned with CamScanner

समूह के सदस्यों को सूचना देने तथा प्राप्त करने की प्रक्रिया से होती है। संचार संरचना समूह के आकार पर प्रत्यक्ष रूप से निर्भर करता है। यदि समूह का आकार छोटा होता है, तो सदस्यों के बीच संचार प्रत्यक्ष होता है। यदि समूह का आकार बड़ा होता है, जैसे कि औपचारिक समूहों में पाया जाता है, तो सदस्यों के बीच संचार का स्वरूप भी जटिल हो जाता है। ऐसी परिस्थिति में एक सदस्य पदानुक्रम में ठीक अपने ऊपर या नीचे के सदस्य से तो प्रत्यक्ष रूप से संचार स्थापित कर पाता है, परंतु इससे दूर के सदस्यों के साथ संचार केवल अन्य सदस्यों के माध्यम से ही कर पाता है। अतः ऐसे समूह में संचार बाधित होती है। जिससे समूह संरचना की जटिलता का भी पता चलता है। लिविट तथा शॉ ने समूह संचार संरचना के सामान्यतः पाँच प्रकार के बतलाये हैं — श्रृंखला संचार संरचना, वृत्त संचार संरचना, Y- आकार संचार संरचना, चक्र संचार संरचना तथा कमकन (comcon) संचार संरचना।

 # विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच संबंध — किसी भी समाज में बहुत तरह के सामाजिक समूह होते हैं। किसी समूह विशेषकर बड़े समूह की संरचना को समझने के लिए उसके अन्दर के विभिन्न सामाजिक समूह के संबंधों के बारे में जानना आवश्यक है। जैसे— अगर किसी राज्य (बड़ा समूह) की संरचना को समझने के लिए इसके विभिन्न समूहों जैसे- अधिकारियों का समूह, मजदूरों का समूह, धार्मिक संगठनों, व्यापारियों का समूह आदि के आपसी संबंधों के बारे में जानकारी आवश्यक होगा। यदि इन विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच का संबंध सौहार्दपूर्ण होगा, तो इस बड़े समूह अर्थात राज्य की संरचना को ठीक ढंग से समझ पायेंगे, क्योंकि यह अधिक स्पष्ट होगा।

इसप्रकार, समूह की संरचना की व्याख्या समाज मनोवैज्ञानिकों ने विभिन्न तत्वों के रूप में किया है। इन तत्वों को समझकर ही किसी समूह संरचना की व्याख्या स्पष्ट रूप से की जा सकती है।

NOTE

Scanned with CamScanner